खुले में शौच मुक्त ग्रामों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (राजनांदगांव जिला के अंबागढ़ चौकी विकासखंड के विशेष संदर्भ में)

रितु चन्द्राकर[a], डॉ. सपना शर्मा सॉरस्वत[b]

a. शोधछात्रा, शोध केंद्र–शासकीय विश्वनाथ यादव, तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.), भारत.

b. शोध निर्देशक, शोध केन्द्र – शासकीय विश्वनाथ यादव, तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग, (छ.ग.), भारत.

शोध सारांशः प्रस्तुत शोध पत्र में अंबागढ़ चौकी विकासखंड के खुले में शौच मुक्त ग्रामों का अध्ययन किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में खुले में शौच एक गंभीर समस्या है। खुले में शौच प्रथा को समाप्त करने हेतु स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत विभिन्न प्रयास किए गए तथापि कुछ क्षेत्रों ने पहले शौच मुक्त क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त किया जिसमें छत्तीसगढ़ प्रदेश में अंबागढ़ चौकी विकासखंड का प्रथम स्थान है। खुले में शौच मुक्त का विषय केवल शौचालय निर्माण तक ही सीमित नहीं है अपितु यह व्यवहार में परिवर्तन का भी विषय है।

कुंजी शब्दः शौच मुक्त अभियान, स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना

ग्रामीण क्षेत्रों में खुले में शौच करना एक पुरानी आदत है खुले में शौच से जल की शुद्धता एवं गुणवत्ता खत्म हो जाती है इसके बाद न तो पानी पीने लायक रहता है और न ही नहाने लायक खुले में शौच करने से हमारे आस–पास गंदगी फैलती है, मच्छर पैदा होते है तथा बीमारियाँ पनपती है। खुले में शौच की प्रथा को समाप्त करने हेतु स्वच्छ भारत मिशन को एक जन आंदोलन के रूप में ग्रामीण क्षेत्रों में कियान्वित किया जा रहा है। स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत 02 अक्टूबर 2014 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा महात्मा गांधी के "स्वच्छ भारत" के स्वप्न को पूरा करने के उद्देश्य से की गई। खुले में शौच मुक्त ग्राम की संकल्पना साकार करने हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में समुदाय संचालित संपूर्ण स्वच्छता के माध्यम से जन समुदाय को जागरूक किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ में अभी भी कई इलाकों में खुले मे शौच किया जाता है जो कि समाज, स्वास्थ्य व अर्थव्यवस्था के लिए एक गंभीर समस्या है। बाहर छोड़े गए मानव मल अपशिष्ट कई बीमारियों को फैलाने के मुख्य कारक है। व्यक्तिगत स्वच्छता और साफ–सफाई काफी हद तक पेयजल एवं समुचित स्वच्छता सुविधा की उपलब्धता पर निर्भर करती है। जल–स्वच्छता व स्वास्थ्य के बीच सीधा संबंध है। अस्वच्छ पेयजल का उपयोग करना, मानव मल का उचित ढंग से निपटान न किया जाना, पर्यावरण की समुचित साफ–सफाई की व्यवस्था का न होना तथा स्वंय की सफाई न होना व अस्वच्छ भोजन ग्रहण करना बीमारियों के प्रमुख कारण रहे हैं।

चूंकि स्वच्छता राज्य का विषय है, अतः राज्य सरकार को अपनी कियान्वयन नीति एवं तंत्रों पर निर्णय लेने व राज्य विशिष्ट जरूरतों को ध्यान में लाने के लिए लोचनीयता प्रदान करके स्वच्छ भारत की ओर अग्रसर होना होगा तथा खुले में शौच व्यवहार को समाप्त कर शौचालय के शत–प्रतिशत उपयोग सुनिश्चित करना होगा। व्यक्तिगत शौचालय का निर्माण केवल शासन द्वारा प्राप्त हाने वाली धनराशि मात्र से संभव नहीं होगा बल्कि तकनीकी विकल्पों तथा उचित शौचालय के चुनाव के साथ–साथ स्वमेव शौचालय निर्माण पर बल देना होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

(1) उत्तरदाताओं के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ज्ञात करना।

(2) खुले में शौच मुक्त अभियान का मूल्यांकन करना एवं आवश्यक सुझाव देना।

उपकल्पना

(1) शिक्षित लोगों का खुले मे शौच मुक्त अभियान को कियान्वित करने में महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

(2) महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से क्षेत्र को शीघ्रता से खुले में शौच मुक्त किया जा सकता है।

शोध क्षेत्र एवं प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य में छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगांव जिला के अंबागढ़ चौकी विकासखंड का चयन किया गया है। अंबागढ़ चौकी जिला मुख्यालय राजनांदगांव से 51 किलोमीटर की दूरी पर पश्चिम दिशा में स्थित है। यहाँ की जनसंख्या 108334 है जिसमें पुरूष 52780 तथा महिला 55554 है।

* Corresponding Author: rituchandrakar76@gmail.com • 9407748800

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता द्वारा अवलोकन, साक्षात्कार अनुसूची एवं द्वितीयक स्त्रोत के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है। प्राथमिक समंको को एकत्र करने के लिए शोधकर्ता द्वारा साक्षात्कार अनुसूची तैयार करके अंबागढ़ चौकी विकासखंड के तीन ग्राम पंचायत के 150 परिवारों का चयन दैव निदर्शन विधि के लॉटरी पद्वति के माध्यम से किया गया है। द्वितीयक समंको को इंटरनेट, समाचार पत्र तथा सरकारी प्रकाशनों से संग्रहित किया गया है। इस प्रकार संकलित तथ्यों का वैज्ञानिक पद्धति द्वारा वर्गीकरण, सारणीयन एवं सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है।

खुले में शौच मुक्त के अध्ययन के लिए अंबागढ़ चौकी विकासखंड के तीन ग्राम पंचायत बांधा बाजार ग्राम पंचायत, चिल्हाटी ग्राम पंचायत तथा कोरचा टोला ग्राम पंचायत के 150 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के माध्यम से किया गया है। इसमें विकासखंड में दूरस्थ, मध्य के तथा निकटस्थ एक–एक ग्राम का चयन कर प्रत्येक ग्राम से लाटरी पद्वति से 50 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है।

तालिका 01

उत्तरदाताओं की शिक्षा का स्तर एवं शौचालय निर्माण में संबंध

क्रं.	शिक्षा का स्तर	शौचालय निर्माण कराने वाले उत्तरदाता				योग	
		महिला		पुरूष			
		आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत
1.	निरक्षर	07	9.72	05	6.42	12	8
2.	नवसाक्षर	07	9.72	05	6.42	12	8
3.	प्राथमिक शिक्षा	18	25.00	22	28.20	40	26.67
4.	माध्यमिक शिक्षा	28	38.89	24	30.76	52	34.67
5.	हाईस्कूल	04	5.56	06	7.69	10	6.67
6.	हायर सेकेण्डरी	06	8.33	10	12.82	16	10.66
7.	महाविद्यालय	02	2.78	06	7.69	08	5.33
	योग	72	48	78	52	150	100

सार्थकता स्तर P = 0.05, स्वतंत्र अंश (df) = (2-1) (7-1) = 6

सारणी मान = 12.592

काई वर्ग का परिकलित मान x^2 = 44.485

तालिका क्रमांक 01 में शौचालय निर्माण का उत्तरदाताओं के शैक्षाणिक स्तर के आधार पर विश्लेशण किया गया है। विश्लेशण में प्राप्त काई वर्ग परीक्षण का परिकलित मान 44.485 सारणी मान 12.592 से अधिक है, जो कि दोनों में सार्थक सहसंबंध की पुष्टि करता है। अर्थात साक्षर उत्तरदाताओं ने खुले में शौच मुक्त अभियान में अधिक सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया है।

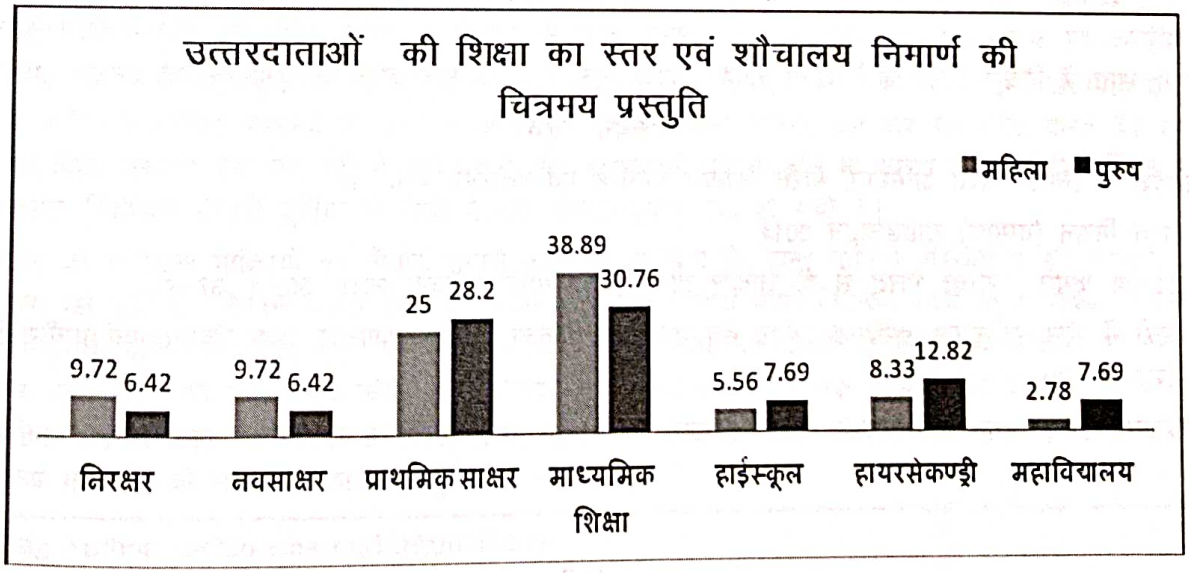

तालिका कमांक 1 में प्रदर्शित उत्तरदाताओं की शिक्षा संबंधी तथ्यों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अंबागढ़ चौकी विकासखंड में सर्वाधिक 34.67 प्रतिशत उत्तरदाता माध्यमिक शिक्षा, 26.67 प्रतिशत उत्तरदाता प्राथमिक शिक्षा, 10.66 प्रतिशत उत्तरदाता हायर सेकेण्डरी, 8 प्रतिशत उत्तरदाता निरक्षर, 8 प्रतिशत उत्तरदाता नवसाक्षर, 6.67 प्रतिशत उत्तरदाता हाईस्कूल तथा 5.33 प्रतिशत उत्तरदाता महाविद्यालय स्तर के शिक्षा प्राप्त किए है। इससे स्पष्ट होता है कि साक्षर लोगों ने खुले में शौच मुक्त अभियान को सहर्ष स्वीकार किया। इसकी पुष्टि ऊपर दिए गए काई वर्ग परीक्षण से भी होता है।

तालिका कमांक 1 में प्रदर्शित उत्तरदाताओं के लिंग संरचना के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में 52 प्रतिशत पुरूष तथा 48 प्रतिशत महिलाओं ने खुले में शौच मुक्त अभियान में सक्रिय भूमिका निभाई। इससे स्पष्ट होता है अम्बागढ़ चौकी में खुले में शौच मुक्त अभियान में पुरूष प्रधान परिवार में भी महिला सदस्यों ने आगे बढ़कर नेतृत्व किया वस्तुतः अंबागढ़ चौकी विकासखंड छत्तीसगढ़ में सर्वप्रथम खुले में शौच मुक्त विकासखंड बन सका।

सुझाव एवं निष्कर्ष

राजनांदगांव जिले का सामाजिक, आर्थिक रूप से पिछड़ा आदिवासी बाहुल्य एवं नक्सल प्रभावित तहसील अंबागढ़ चौकी छत्तीसगढ़ राज्य का पहला खुले में शौच मुक्त विकासखंड बन गया है। इस विकासखंड की 69 ग्राम पंचायत अब खुले में शौच की पुरानी प्रथा को त्याग चुके हैं और सभी घरों में शौचालय का निर्माण हो चुका है। अंबागढ़ चौकी में कोई भी खुले में शौच नहीं जाता है। अगर कोई ऐसा करना भी चाहे तो प्रत्येक गांव में गठित सतर्कता एवं निगरानी समिति उन्हें इस शर्मनाक कुप्रथा के बारे में जागरूक करती है। अंबागढ़ चौकी को यह उपलब्धि महिला स्वसहायता समूहों, स्थानीय समुदायों, जनप्रतिनिधियों और स्वच्छ भारत मिशन के तहत जिला प्रशासन के सहयोग से मिली है। लोगों को जागरूक बनाने में लगातार बैठकें, जनसंपर्क, दीवारों पर पेंटिंग और आकर्षक पोस्टरों की बड़ी भूमिका रही है। खुले में शौच वाले स्थलों की सफाई, सौंदर्यीकरण व तुलसी, पीपल जैसे पवित्र पौधों का रोपण किया गया ताकि लोग इन स्थलों पर शौच न करें। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता मितानिन व महिला समूहों द्वारा घर–घर संपर्क अभियान चलाया गया। स्वच्छता पंजी का निर्माण व स्वच्छता मतदान कराया गया। गांवों में सघन प्रचार–प्रसार, रैली, मुनादी करवाई गई। विभिन्न निगरानी समितियाँ, बिहनिया दल, वानर सेना, रेड ब्रिगेड द्वारा निगरानी व खुले में शौच करते देख सीटी बजाना जैसे कार्य किया गया। खुले में शौच करने वालों को ग्राम सभा द्वारा प्रतिबंधित कर जुर्माना लगाया गया तथा स्वच्छ भारत मिशन के तहत शौचालय निर्माण हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की गई। भूमिका अंबागढ़ चौकी विकासखंड को खुले में शौच मुक्त बनाने में उपरोक्त समस्त प्रयासों की प्रमुख भूमिका रही। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में शिक्षित लोगों और महिलाओं की विशिष्ट भूमिका रही है।

अंबागढ़ चौकी क्षेत्र में गांव की महिलाएँ कहती हैं कि अब उन्हें शौच के लिए शाम होने का इंतजार नहीं करना पड़ता। अब वे घर में बने शौचालय का उपयोग करती हैं। महिलाएँ बताती है पहले उन्हें खुले में शौच जाने में बहुत परेशानी होती थी। कभी पेट खराब हो जाए तो भी भोर या शाम का इंतजार करना पड़ता था। यदि उजाले में शौच जाना पड़ता तो उन्हें बहुत शर्मिंदगी होती थी।

इस अभियान की सफलता व स्वच्छता स्थायित्व को बनाए रखने के लिए विभिन्न निगरानी दलों को निरंतर सक्रिय रखा जाना आवश्यक है। बढ़े हुए परिवारों को स्वमेव शौचालय निर्माण के लिए प्रेरित किए जाना चाहिए। स्वच्छ भारत मिशन केवल शौचालय निर्माण तक सीमित नहीं है अपितु व्यवहार परिवर्तन के व्यापक विचार से संबद्ध है। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है शिशु व बच्चों के मल का भी सुरक्षित निष्पादन हो। मल साफ करने के पश्चात् तथा भोजन से पूर्व हाथों को साबुन से धोने के लिए सभी को प्रेरित किया जाए। व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक शौचालयों का शतप्रतिशत उपयोग हेतु प्रोत्साहित किया जाए। प्रत्येक घर तक नल–जल योजना का विस्तार कर प्रत्येक परिवार को आवश्यकतानुसार जल उपलब्ध कराया जाना भी जरूरी है। समय–समय पर खुले में शौच मुक्त ग्राम होने के गौरव पर ग्राम सभा में विचार विमर्श होते रहना चाहिए ताकि खुले में शौच मुक्त होने के स्थायित्व को बनाए रखा जा सके।

संदर्भ सूची

1. दिशा निर्देश – निर्मल भारत अभियान, भारत सरकार पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय.
2. स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) गाइडलाइन 2014.
3. सिंह, आशुतोष कुमार : स्वच्छ भारत से ही साकार होगा स्वस्थ भारत, योजना 2015, 59; 1, 37–41.
4. ग्रामीण क्षेत्रों में ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन हेतु तकनीकी विकल्प, ठाकुर प्यारेलाल राज्य पंचायत एवं ग्रामीण विकास संस्थान, निमोरा, सितम्बर 2017.
5. वेबसाइट, पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय, भारत सरकार.